Dr. Vandana Suman
Associate professor
Deptt. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A - III Sem -- DSE - I

1. हिन्दू-धर्म में "पुरुषार्थ"

मनुष्य के लक्ष्य को 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। यह दो शब्दों से बना है 'पुरुष' और 'अर्थ'। पुरुष का अर्थ विवेकशील प्राणी, तथा अर्थ का मतलब 'लक्ष्य' है। इस प्रकार विवेकशील प्राणी अर्थात् पुरुष के लक्ष्य को पुरुषार्थ कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। यदि लक्ष्य अच्छा हो परन्तु उसके प्राप्ति का साधन ~~विकृत~~ विकृत स्वभाव हो तो पुरुषार्थ का स्वरूप शुद्ध नहीं रहता है। हिन्दू-धर्म में चार प्रकार के पुरुषार्थ माने गए हैं, वे हैं

1. काम
2. अर्थ
3. धर्म
4. मोक्ष

व्यावहारिक दृष्टिकोण से काम और अर्थ पुरुषार्थ माने गए हैं। धर्म और मोक्ष को पारलौकिक दृष्टि से पुरुषार्थ माना गया है।

(1.) काम — हिन्दू-धर्म में काम को प्रथम पुरुषार्थ माना गया है। वात्स्यायन के अनुसार 'काम' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया गया है :— (1) विस्तृत अर्थ, (2) संकुचित अर्थ।

MARCH '23

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

APRIL '23

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

1. विस्तृत अर्थ में काम शब्द का प्रयोग हमारी सभी इन्द्रियों से प्राप्त सुख के लिए होता है, जैसे - गाना, हरा दृश्य, माधुर्यमय संगीत आदि के अनुभव, को काम कहा जाता है।

2. संकुचित अर्थ में काम का सम्बन्ध सभी इन्द्रियों से उत्पन्न सुख से नहीं है बल्कि सिर्फ यौन सुख से है। काम का अभिप्राय नर-नारी के संयोग से लिया गया है। हिन्दू-धर्म में यौन सुख को अनैतिक नहीं बतलाया गया है। हिन्दू-धर्म में देव-देवियों के भी विवाहित जीवन की कल्पना की गई है। विवाह को यहाँ आध्यात्मिक उन्नति का साधन माना गया है। यद्यपि हिन्दू-धर्म में इन्द्रिय-सुख को भोगने का आदेश दिया गया है फिर भी इनमें लिप्त रहने का आदेश नहीं दिया गया है। इसके विपरीत इन्द्रियों को नियन्त्रित करने का आदेश दिया गया है।

काम मनुष्य के संवेगात्मक जीवन को निर्दिष्ट करता है। यदि मनुष्य को इसके संवेगात्मक जीवन से वंचित कर दिया जाए तो वह दमनात्मक आत्म-पीड़न का शिकार बन जाता है और निरन्तर नैतिक उत्पीड़न के दबाव में रहता है। यह स्थिति इसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

Our greatest Strength as a human race is our ability to aknowledge our differences

के लिए विनाशकारी होती है। अतः काम को मानवीय जीवन का लक्ष्य मानना पूर्णतः अनुचित है।

(2.) अर्थ को पुरुषार्थ के भेदों में दूसरा स्थान दिया गया है। अर्थ पर केवल मानव का सुख ही निर्भर नहीं करता है बल्कि उसका जीवन भी निर्भर करता है। अर्थ के अभाव में जीवन व्यर्थ हो जाता है। अर्थ के बिना सुख की कामना भी नहीं की जा सकती। काम की प्राप्ति के लिए भी अर्थ की आवश्यकता होती है। अतः पुरुषार्थ की श्रेणी में काम की अपेक्षा अर्थ ही महत्वपूर्ण है। भर्तृहरि ने अर्थ की महत्ता बतलाते हुए कहा है कि धनी व्यक्ति ही कुलीन, ज्ञानी, पंडित, गुणी, वक्ता तथा सुन्दर माना जाता है। इसीलिए अर्थ जैसी महत्वपूर्ण वस्तु की प्राप्ति को जीवन का ध्येय माना गया है। कहा गया है—

'धनात् धर्म ततः सुखम्'

(धन से धर्म और धर्म से सुख मिलता है) जिन लोगों का जीवन बोझिल और आर्थिक संकट में होता है वे धार्मिक नहीं हो सकते। आर्थिक असुरक्षा और

लोग सब जीवन परस्पर विरोधी नहीं हैं। यद्यपि हिन्दू धर्म में अर्थ
को पुरुषार्थ माना गया है किन्तु भी धन
के संचय की अनुमति नहीं दी गई है।
धन उतना ही संग्रह करना चाहिए
जितना कि आवश्यक हो। यदि कोई व्यक्ति
आवश्यकता से अधिक धन का संचय
करता है तब वह अनैतिक कार्य करता है। महाभारत में कहा गया है कि
आवश्यकता से अधिक धन संचय
करने वाला व्यक्ति पाप का भागी है।
इसके अतिरिक्त हिन्दू धर्म में
अर्थ की प्राप्ति का साधन भी शुभ
बतलाया गया है। अशुभ साधनों
से अर्थ का उपार्जन करना
वर्जित बतलाया गया है।

(3) धर्म — सामाजिक
एवं पारलौकिक दृष्टि से 'धर्म' का
पुरुषार्थ का महत्वपूर्ण स्थान है।
धर्म के अभाव में न सुव्यवस्थित
समाज का निर्माण हो सकता है और
न पारलौकिक सुख की कल्पना की जा
सकती है।

'धर्म' शब्द 'धृ'
धातु से बना है जिसका अर्थ होता
है धारण करना। दूसरे शब्दों में
जिसको धारण किया जाय वही
धर्म है। गिरते हुए मनुष्य का

M	T	W	T	F	S	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

JANUARY '23

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

FEBRUARY '23

आचार व्यवहार जो मनुष्य को धारण करता है या बचा लेता है इसको धर्म कहते हैं। धर्म के द्वारा ही सभी प्रजा बंधी हुई है। धर्म विभिन्न क्रियाओं को सुव्यवस्थित करता है। धर्म हमारे पारलौकिक आनन्द का ही साधन नहीं वरन् लौकिक आचरणों का भी समुदाय है जिनके पालन से समाज संगठित रहता है। धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध आदि कुछ ऐसे धर्म हैं जिनका पालन सभी के लिए वांछनीय है। मनु ने ऐसे धर्म को सामान्य धर्म कहा है क्योंकि ये सभी के लिए मानवीय हैं। इसके अतिरिक्त विशेष धर्म प्रत्येक वर्ण एवं आश्रम के लिए अलग-अलग है। इस प्रकार मनु के अनुसार धर्म के दो प्रकार बताए गए हैं— सामान्य एवं विशेष धर्म। यह एक ऐसा लक्ष्य है जो व्यक्ति के समग्र जीवन और समाज की व्यवस्था को भद्रतापूर्ण बना देता है।

(4) मोक्ष — मनुष्य का चौथा पुरुषार्थ है मोक्ष है। मोक्ष को हिन्दू धर्म में चरम लक्ष्य बताया गया है। हिन्दुओं ने संसार को

दुःखों से परिपूर्ण माना है। दुःख से
सम्पूर्ण छुटकारा चाहता है। जब तक मनुष्य
का पुनर्जन्म होगा तभी सांसारिक दुःखों
का भोगना करना आने वाला होगा।
अतः संसार से छुटकारा तथा दुःख
से निवृत्ति ही मोक्ष कहा जाता है।
यह निःश्रेयस (Summum Bonum) है।
इससे बढ़कर दूसरा कुछ नहीं है।
सभी लक्ष्य काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष की
प्राप्ति में सहायक मात्र हैं। काम अर्थ
धर्म निःश्रेयस की प्राप्ति के साधन
हैं। मोक्ष इसके विपरीत वह लक्ष्य है
जो स्वयं साध्य है। इसीलिए मोक्ष
को परम शुभ कहा जाता है।

हिन्दू-धर्म के विभिन्न
पुरुषार्थों में आवश्यक सम्बन्ध है।
जीवात्मा शरीर और आत्मा का
संयोजन है। शरीर से सम्बन्धित रहने
के फलस्वरूप जीवात्मा ऐसे विषयों की
कामना करता है जो शरीर के लिए
आवश्यक है। इसी कारण जीवात्मा काम
अर्थात सुखोपभोग को जीवन का प्रथम
लक्ष्य मानता है। इन्द्रिय-सुख को
अपनाने के लिए धन की आवश्यकता
महसूस होती है। इसलिए अर्थ
अर्थात धन को जीवन का लक्ष्य
माना गया है। परन्तु अर्थ के उपभोग
और आधिपत्य के लिए मानसिक

व्यवस्था की आवश्यकता है। अतः समाज के नियमों का पालन आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार धर्म को तीसरा पुरुषार्थ मानना आवश्यक हो जाता है। परन्तु जीवात्मा उक्त लक्ष्यों को अपनाकर ही संतुष्ट नहीं रह सकता है। इसका कारण यह है कि वे अशाश्वत अर्थात् अनित्य हैं। इसलिए मोक्ष को परम पुरुषार्थ माना जाता है क्योंकि वह नित्य है।

उपर्युक्त चार पुरुषार्थों की जो चर्चा हुई है वे मानवीय स्वभाव के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये पहलू हैं मूल प्रवृत्यात्मक, संवेगात्मक, आर्थिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक। काम मनुष्य के संवेगात्मक पहलू की अभिव्यक्ति करता है। अर्थ मनुष्य के आर्थिक पहलू का प्रकाशन करता है। धर्म मनुष्य के नैतिक पक्ष को प्रस्तावित करता है। मोक्ष मानवीय स्वभाव के आध्यात्मिक पहलू का प्रतिनिधित्व करता है।